मङ्गलम्

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।
यद् भद्रं तन्न आ सुव ॥ 1 ॥

–ऋग्वेदः (5.82.5)

परस्परविरोधिन्योरेकसंश्रयदुर्लभम् ।
सङ्गतं श्रीसरस्वत्योर्भूतयेऽस्तु सदा सताम् ॥ 2 ॥

–विक्रमोर्वशीयम् (5.24)

भावार्थः

हे सूर्य देव! हमारे समस्त पापों को दूर करें तथा जो हमारे लिए मङ्गलकारक है उसे हमें प्रदान करें ॥ 1 ॥

एक दूसरे के विरोध में रहने वाली लक्ष्मी और सरस्वती का एक आश्रय में दुर्लभ समागम सदा सज्जनों के कल्याण के लिए हो ॥ 2 ॥

